पद १४

(राग: खमाज - ताल: त्रिताल धीमा)

जा जा जनहो भजा श्रीगुरुगुज अमृतवचन रस घ्या, पिउनि उमजा।।धु.।। स्वहित करा जा स्वरूपीं रमा जा, निज हित धन श्रीगुरुमाणिक समजा।।१।।